17. इसके इलावा बुद्धिजीवियों को राष्ट्रीय कमजोरियों की ओर भी ध्यान देना होगा। मेरी राय में हमारी राष्ट्रीय कमजोरियां निम्न है :—

क) भूतकाल में भारतीय ज्ञान को, ज्ञान की चरम सीमा समझना। यदि कोई भारतीय ऐसा माने तो फिर वर्तमान या भविष्य में कोई बात सीखने के लिऐ रह ही नहीं जाती। फिर आगे बढ़ने की तो कोई गुंजाईश रहती नहीं। नदी में बहते पानी की बजाए उसकी हालत जोहड़ के खड़े पानी जैसी हो जाएगी। यह गल्त धारणा छोड़नी होगी।

ख) भाग्य के आधार पर गरीबी अमीरी को ठीक मानना और यह समझना कि गरीब इसलिए गरीब है कि उसने पिछले जन्म में पाप किये और अमीर इसलिए अमीर है कि उसने पिछले जन्म में पून्य किया। इस खतरनाक विचार का भारत के शोषित लोगों पर भी इतना खराब प्रभाव पड़ा कि वे यह भूल गये कि उनकी गरीबी का कारण समाज के गरीब विरोधी कायदे कानून हैं न कि पिछले जन्म में उनका किया हुआ कोई काम।

ग) हाथ से काम करने वालों से घृणा की भावना।

घ) Hypocracy अर्थात मन में कुछ और वाणी में कुछ और।

ङ) समबुद्धि के स्थान पर स्वार्थ बुद्धि से देश की समस्याओं पर विचार करने की आदत।

मेरा भाषण पहले ही काफी लम्बा हो गया है, मैं चाहता हूं कि इन विषयों पर हरियाणे का बुद्धिजीवी स्थान स्थान पर इन विषयों पर ठोस मत बना कर जनता का मार्ग दर्शन करें।

देश जिस खतरनाक चौराहे पर खड़ा हो गया है उसे बचाने के लिये जरूरी है कि हरियाणे का बुद्धिजीवी भी अपना पूरा योगदान दे। मुझे पूर्ण आशा है कि यह इतिहासिक सम्मेलन इस दिशा में ठोस कार्यक्रम और सगठन का निर्माण करेगा।

आप सब का बहुत-बहुत धन्यवाद।

मूल चन्द जैन
प्रधान, हरियाणा बुद्धिजीवी वर्ग
कनवेनर; रोहतक

बाबू जी द्वारा 4 मार्च, 1984 को सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल प्रधान, शिरोमणी अकाली दल को लिखे गए पत्र के अंश।

आदरणीय सन्त जी,

करनाल

सादर नमस्कार।

बहुत दिनों से आपको पत्र लिखने की इच्छा थी, परन्तु किसी न किसी कारण पत्र नहीं लिख सका। आप एक माने हुए सन्त होने के अलावा इस समय अकाली मोर्चे के सफल डिक्टेटर भी हैं और इस हैसीयत से न केवल पजाब के सिख भाइयों के ही सबसे बड़े नेता हैं, किन्तु भारत के बड़े नेताओं में आपको गिना जाता है। मैं तो हरियाणा का एक साधारण नागरिक हूं, परन्तु सारा जीवन मात्र भूमि की सेवा के लिए थोड़ा बहुत करता रहा हूं। आप शायद मुझे नहीं जानते। लगभग चार साल हुए जब कालांबली में जहरीली शराब काँड हुआ, तो वहां एक सभा में आपसे भेंट हुई थी। उस थोड़े से समय में ही आप के आध्यात्मिक तेज शांत स्वभाव और मीठी वाणी का मुझ पर काफी प्रभाव पड़ा था। वैसे अकाली पार्टी के कुछ अन्य नेतागण सरदार प्रकाश सिह बादल, सरदार बलवन्त सिह, सरदार दारा सिह, वकील हाई कोर्ट और सरदार अजमेर सिह, भूतपूर्व मन्त्री आदि से मेरा काफी सम्बन्ध रहा है।

और बात लिखने से पहले आपको यह बताना मैं जरूरी समझता हुं कि गुरुओं में मेरी अति श्रद्धा है। गुरु नानक जी का नाम में अपनी हर प्रार्थना में जरूर लेता हूं और उनके वो प्रवचन 'निर्वैर, निर्विकार निर्भय" को जब याद करता हूं तो मुझे आत्मिक बल मिलता है। विश्व के भिन्न-2 देशों में बहुत बली अवतार और गुरु पैदा हुए हैं परन्तु ऐसे महापुरुष ऊंगलियों पर गिने जा सकते हैं, जिन्होने पीरी और मीरी का जामा पहनकर जुल्म और अत्याचार के खिलाफ केवल उपदेश ही नहीं दिया किन्तु उस उपदेश पर आचरण करते हुए विश्व भर के इतिहास में न भूला देने वाली कुर्बानियां भी की।

मैं अब तक समझता रहा कि गुरूओं की दी हुई यह विरासत आपकी और मेरी सांझी है। परन्तु सिख भाईयों में कुछ ऐसे सिख पैदा हो गए हैं जो मेरे जैसे, गुरुओं के अनुयायियों से, यह विरासत छिनने में लगे हुये हैं। जिन गुरुओं, और, महाराजा रणजीत सिंह के अन्तिम काल तक, इन अनगणित सिख भाईयों ने हिन्दुओं की रक्षा के लिए अपनी जान तक की बाजी लगा दी, आज उन्हीं गुरुओं के नाम पर कुछ सिख भाई हिन्दुओं को चुन-चुन कर मार रहे हैं। बैंक, पैट्रोलपम्प आदि लूटे जा रहे हैं। आप की ओर से कभी-2 उनकी निन्दा का ब्यान और कभी यह बयान कि सभी कुछ सरकार करा रही है, समाचार पत्रों में पढ़ लेता हूं। परन्तु आप के इन बयानों से हालत सुधरने की बजाये दिन प्रतिदिन बिगड़ते जा रहे हैं। और जब से आपके नेतृत्व में संविधान की धारा 25 की उपधारा को जलाने का प्रोग्राम चालू हुआ है, तो ऐसा प्रतीत होने लगा है कि हम सब ही गुरुओं की उस महान विरासत को भूला बैठे हैं।

आप शायद कहें कि हरियाणे के लोगों ने भी कई स्थानों पर सिख भाईयों को मारने या उनकी सम्पत्ति लुटने, जलाने या बेइज्जत करने में कसर बाकी नहीं रखी। हरियाणा में जो कुछ 15 और 17-18 फरवरी को हुआ, उसके लिए मेरे जैसे आदमी अति शर्मिन्दा हैं। इन हालत को नारमल बनाने के लिये मैं या मेरे जैसे आदमी जो कर सके, हमने किया। करनाल में रहने वाले किसी भी सिख भाई से आप इस बारे में जानकारी ले सकते हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि जो पंजाब में हो रहा और खास तौर पर जो कुछ14 फरवरी से लेकर अब तक हुआ, है उसके लिये भी कोई शर्मिन्दा है? और उन हालात को नारमल बनाने के लिये कोई ठोस प्रयत्न किया जा रहा है?

सतलुज ब्यास के पानी के बटवारे और चण्डीगढ़, अबोहर-फाजिल्का आदि की समस्या का हरियाणे से गहरा सम्बन्ध है। हरियाणा के प्रतिनिधियों को नजर अन्दाज कर केवल भारत सरकार पर दबाव डालकर आप इन समस्याओं का निर्णय कैसे करा सकते है? चण्डीगढ युनियन टैरिटरी के लोगों को इस प्रजातांत्रिक मार्ग का आपका मोरचा किस आधार पर विरोध करता है कि यहां के निवासियों का जो भारी मत निर्णय करे उसी प्रदेश में इस टैरीटरी को शामिल किया जाये। यही बात अबोहर फाजिल्का के बारे में है। World Council for Sikh Affairs ने सतलुज ब्यास के पानी के बटवारे के बारे में जो पुस्तिका लिखी है, वो मैंने ध्यान से पढी है। बड़ी मेहनत और होशियारी से लिखी हुई इस पुस्तिका में दिये गये अधिकतर तर्क, वादे बेबुनियाद है। मुझे खेद है कि इसमें सिख भाईयों को गलत तौर पर उकसाने और भड़काने की कोशिश की गई है।

यह पत्र बहुत लम्बा हो गया है। इसके लिए आप से क्षमा चाहता हूं और आशा करता हूं कि आप सारी परिस्थिति पर नये ढंग से विचार करेंगें और इस पत्र को, जिस सिपरिट में ये लिखा है, उसी सिपरिट में पढने और उत्तर देने का भी कष्ट करेगें।

सादर।

आपका
मूल चन्द जैन

downloaded from moorchandjain.org